:: प्राक्कथन ::

राजेन्द्र अवस्थी हिन्दी के प्रसिध्द कहानीकार हैं। उन्होंने साहित्य की प्राय: सभी विधाओं में कुछ न कुछ लिखा है।

काव्य, उपन्यास, बालसाहित्य, तथा कहानी -साहित्य भी लिखा है। बचपन से ही लिखने की आदत और विषमताओं से जूझनेका साहस रखनेवाले राजेन्द्र अवस्थीजी ने " मेरी प्रिय कहानियाँ " इस संकलन में सम्पूर्ण कहानियों की मानवता के जीवन की यथार्थता का चित्रण अत्यन्त प्रभावोत्पादक रीति से किया है।

डॉ. राजेन्द्र अवस्थीजी की " मेरी प्रिय कहानियाँ " इस पुस्तक पर शोध-कार्य करने की प्रेरणा मुझे उनका कहानी - संग्रह पढ़कर मिली। उनके इस कहानी संग्रह में मध्यमवर्गीय जीवन और आदिवासी जीवन का यथार्थ चित्रांकन जितना यथार्थ है, उतना यथार्थ अन्य किसी कहानीकार के कहानी-साहित्य में नहीं पाया। उनकी " मेरी प्रिय कहानियाँ " पुस्तक ने मुझे प्रभावित किया। इसी कारण मैंने अवस्थीजी की कहानियों का अध्ययन करने का प्रयास किया है, और इस लघु-प्रबन्ध की दृष्टि से मुझे अवसर भी मिला है।

प्रस्तुत पुस्तक " मेरी प्रिय कहानियाँ " इस विषय का अध्ययन करते समय मेरे सामने कुछ प्रश्न आये है, जो निम्नानुसार हैं -

१] प्रिय कहानी - साहित्य में राजेन्द्र अवस्थीजी का क्या स्थान है ?

२] राजेन्द्र अवस्थीजी की प्रिय कहानियों में चित्रित समस्याएँ कौनसी है ?

३] राजेन्द्र अवस्थीजी की प्रिय कहानियों का भाव-पक्ष और कला-पक्ष कितना महत्व का है ?

४] राजेन्द्र अवस्थीजी की प्रिय कहानियों की महत्वपूर्ण विशेषाताएँ किस तरह हैं ? मैंने राजेन्द्र अवस्थीजी की प्रिय कहानियों का अध्ययन और विश्लेषण करते समय उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर ढूँढने का महत्वपूर्ण प्रयास किया है। मैंने अपने प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध को सात अध्यायों में विभाजित कर दिया है।

इस लघु-प्रबंध के प्रथम अध्याय में राजेन्द्र अवस्थीजी का व्यक्तिगत परिचय करा दिया गया है। इस अध्याय में राजेन्द्र अवस्थीजी के जन्म से लेकर आजतक के जीवनक्रम का परिचय थोडे में चित्रित किया गया है।

प्रस्तुत अध्याय में राजेन्द्र अवस्थीजी की जन्मतिथि, स्थान, नाम, शिक्षा और उनके जीवन का बदलता हुआ नक्शा आदि का भी चित्रांकन स्पष्ट किया गया है।

द्वितीय अध्याय में राजेन्द्र अवस्थीजी के साहित्यगत परिचय का संक्षेप में विचार किया गया है। इस में उनकी सम्पादित कृतियाँ और अन्य बाल साहित्य आदि का चित्रण-चित्रित करने का प्रयास किया गया है।

तृतीय अध्याय प्रस्तुत लघु-प्रबन्ध की आत्मा है। इस में राजेन्द्र अवस्थीजी के प्रिय कहानी-साहित्य की कहानियों का विवरण और लेखन के बारे में दृष्टिकोण तथा कहानियों का वर्गीकरण और शीर्षकों का विश्लेषण कर दिया गया है। अन्त में संक्षेप में निष्कर्ष देकर संदर्भ - सूची भी दी गयी है।

चौथा अध्याय इस प्रस्तुत लघु प्रबन्ध का मर्मस्पर्शी अध्याय है। इस में लेखक की कहानियों के भाव-पक्ष को स्पष्ट करने का बड़ा महत्वपूर्ण प्रयास किया गया है। इस में वस्तु, भावों का द्वंद, विविध भाव-पक्ष मे - सामाजिक पक्ष, राजनैतिक पक्ष, मनोवैज्ञानिक पक्ष, सांस्कृतिक पक्ष और साथ ही साथ इतिवृत्तितत्व शैली, चरित्र-प्रधान शैली, वर्णनात्मक शैली, आत्म चरित्रात्मक शैली, नाटकीय शैली पत्र शैली आदि का उल्लेख करते हुए साथ में निष्कर्ष और संदर्भ सूची भी दी गयीहै।

पाँचवे अध्याय में आलोच्य कहानियों के कला-पक्ष को बड़े प्रभावशाली ढंग से स्पष्ट कर दिया गया है। इस में - प्रिय कहानियों की योजना का बोध उन कहानियों का कथानक, संवाद, पात्र - और चरित्र-चित्रण वातावरण -चित्रण शीर्षक, भाषा-शैली, उद्देश तथा संदर्भ सूची को स्पष्ट करने का मैंने प्रयास किया है।

छटे अध्याय में " मेरी प्रिय कहानियाँ " इस पुस्तक की प्रत्येक कहानी की महत्वपूर्ण विशेषताएँ स्पष्ट करने की कोशिश की गयी है।

अन्त में सातवाँ अध्याय " उपसहांर " है। इसमें लघु-प्रबन्ध के विषय का सारांश स्पष्ट कर दिया है और साथ ही कुछ निष्कर्ष भी दिये है। राजेन्द्र अवस्थीजी की " मेरी प्रिय कहानियाँ " इस पुस्तक का विश्लेषण करने की पश्चात् जो नीष्कर्ष हाथ लगेंगा वंही उपसहांर के रूप में देने का प्रयास किया गया है।

प्रत्येक अध्याय के अन्त में संदर्भ सूची को स्पष्ट कर दिया गया है।

:: कृतज्ञता ::

प्रस्तुत लघु शोध- प्रबन्ध -कार्य का दृढ संकल्प श्रध्देय गुरुवर डॉ. ज्ञानराज काशीनाथ गायकवाडजी के कृपापूर्ण निर्देशन का फल है। आपके सहयोग के बिना यह कार्य सम्पन्न न हो पाया। आपने प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध के शीर्षक के चयन से लेकर अन्त तक महत्वपूर्ण सुझाव दिए हैं। आपने इस लघु-शोध प्रबन्ध का प्रत्येक अध्याय देखा है और मुझे निरन्तर प्रोत्साहन एवं प्रेरणा देकर मेरी सहायता की है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध आप के सुयोग्य निर्देशन का ही फल है। आप के स्नेह, प्रेरणा और आशीर्वाद का मैं चिरंतन अभिलाषी रहूँगा। गुरुपत्नी सौ.लताजी गायकवाड, ज्येष्ठ सुपुत्र ॲडव्होकेट सुनीतकुमार गायकवाड, उज्ज्वल गायकवाड और राहुल गायकवाड ने भी मुझे समय समय पर लघु शोध प्रबंध लिखकर पूरा करने को प्रोत्साहित किया है- मैं इनका भी आभारी हूँ। गुरुवर प्रा. वि. वि. जाधव, डॉ. वसंत के मोरे, डॉ.पी.एस.पाटील, डॉ.के. पी.शहा, डॉ. अर्जुन चव्हाण और जिन्होंने मुझे स्नेह से सहाय्यता की है उन सबका आशीर्वाद और प्रेम मेरे साथ रहा है, उनके प्रति मैं सविनय आभारी हूँ।

प्रा. आर.डी.कदम, प्रा.टी.एन.लोंखडे, प्रा.आर.बी.भोसले, प्रा.जे.एस.काटे, प्रा. भगवान कदम, प्रा. ए.जे. जाधव, प्रा. भारत खिलारे, प्रा. संजय नवले, प्रा. रवि नलवडे,प्रा. बी.डी. पारसे प्रा. ए.जी.कांबळे आदि का मैं आभारी हूँ।

मित्रवर श्री.डी.के.कसबे, बी.डी.जाधव [सर] प्रा.तुकाराम शिंदे, प्रा. लोखंडे, बी.के., अजिनाथ सोनवणे, सुनिल वाघमारे, राजेन्द्र गुंड, सिध्दनाथ भंडारे, बाळासाहेब जाधव, राजेन्द्र जाधव आदि,सद्भावपूर्ण सुझाव देकर अपनी मित्रता की प्रामाणिकता सिध्द कर दी है, उनके प्रति मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

पिताजी - मनोहर सोमाजी जाधव, माताजी धोंडूबाई मनोहर जाधव, भाई आप्पासाहेब, भाभी सौ.आशा और मेरे चाचा आर.एस.जाधव, चाची शोभा रामहारी जाधव, का मैं आभारी हूँ जिनकी शुभकामनाएँ मेरे साथ

थी और आशीर्वाद रहेंगे। बहन के नाते कु. भारती जाधव और भावज के नाते सौ.कल्पना, सौ.मीना और सौ. रजनी उनका मैं आभारी हूँ। शिवाजी विश्व-विद्यालय के ग्रंथालय के सभी कर्मचारियों के प्रति मैं आभारी हूँ।

अन्त में इस लघुशोध- प्रबन्ध को अतिशीघ्र एवं सुचारु रूप से टंकलिखित रूप देने का काम श्री. किशोर क्षीरसागर बार्शी, ने किया है, उनके प्रति भी मैं आभारी हूँ।

मैं यह लघु शोध - प्रबन्ध अत्यन्त विनम्रता के साथ एम्. फिल्. उपाधि के हेतु प्रस्तुत कर रहा हूँ।

दिनांक : २९/१२/१९९४

अनिल मनोहर जाधव
[शोध - छात्र]

****